Journal of Religion & Film

Volume 19
Issue 2 *Fall 2015*

Article 13

7-31-2018

Is Slumdog Millionaire a Retelling of the Ramayana? (Hindi)

William L. Blizek
University of Nebraska at Omaha, wblizek@unomaha.edu

Michele M. Desmarais
University of Nebraska at Omaha, mdesmarais@unomaha.edu

Recommended Citation
Blizek, William L. and Desmarais, Michele M. (2018) "Is Slumdog Millionaire a Retelling of the Ramayana? (Hindi)," *Journal of Religion & Film*: Vol. 19 : Iss. 2 , Article 13.
Available at: https://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol19/iss2/13

This Article is brought to you for free and open access by DigitalCommons@UNO. It has been accepted for inclusion in Journal of Religion & Film by an authorized editor of DigitalCommons@UNO. For more information, please contact unodigitalcommons@unomaha.edu.

Is Slumdog Millionaire a Retelling of the Ramayana? (Hindi)

Abstract
This is a Hindi translation of the article that appears in English in this same issue.

Is a banner with a picture of Rama and Sita on it and the word, “Ramayana,” the only link between the film Slumdog Millionaire and the great Hindu epic? In this paper we explore elements in the film that correspond to elements in the Ramayana. There is no one-to-one correlation, and some relationships between the two are, in fact, mirror images. However, there are enough correlations and influences to suggest that the film might be considered a retelling of the Ramayana. We also acknowledge though that there are also features of the film that some would find offensive and that would lead them to reject this idea that Slumdog Millionaire is a retelling of the epic.

Keywords
Hinduism, Ramayana

Author Notes
William L. Blizek is Professor of Philosophy and Religious Studies at the University of Nebraska at Omaha. He is a Founding Editor of the Journal of Religion & Film and editor of The Bloomsbury Companion to Religion and Film. Michele Marie Desmarais is Associate Professor of Religious Studies and Native American Studies at the University of Nebraska at Omaha. She is a former editor of the Journal of Religion & Film and author of "Changing Minds: Mind, Consciousness and Identity in Patanjali's Yoga-sutra and Cognitive Neuroscience" (2008) and an editor of "Samskrta-Sadhuta ‘Goodness of Sanskrit:’ Essays in Honour of Professor Ashok Aklujkar" (2012). Together, Dr. Blizek and Dr. Desmarais are co-authors of: "What Are We Teaching When We Teach Religion and Film?" in Teaching Religion & Film, Greg Watkins, ed. (2008); “The Power of Film/The Power of Religion,” in Proceedings of the Avanca International Conference Cinema (July 2010); and “Religion and Film Studies through the Journal of Religion and Film,” in Religion, Vol. 41, Issue 3 (2011).

This article is available in Journal of Religion & Film: https://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol19/iss2/13

धर्म तथा फिल्म पत्रिका

वाल्यूम 19 लेख–1
अंक– 2 शरत् काल 2015 (fall 2015)

10.01.2015

क्या स्लमडॉग मिलियनेयर *रामायण* का पुनर्कथन है?

विलियम एल. ब्लाइज़ेक (William L. Blizek)

नेब्रास्का विश्वविद्यालय (ओमाहा) wblizek@unomaha.edu

मिशेल एम. डुमारे (Michele M. Desmarais)

नेब्रास्का विश्वविद्यालय (ओमाहा) mdesmarais@unomaha.edu

प्रशंसा आलेख (साइटेशन)
ब्लाइज़ेक, विलियम एल. तथा, डुमारे मिशेल एम. (2015)
"क्या स्लमडॉग मिलियनेयर *रामायण* का पुनर्कथन है?"
धर्म तथा फ़िल्म पत्रिकाः वाल्यूम–19 अंक–2 लेख–1
उपलब्धताः http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol19/iss2/1

यह लेख आपके स्वतंत्र और निर्बाध प्रवेश के लिए प्रस्तुत किया हैः
डिजिटल कॉमन्स @ यूएनओ Digitalcommons@uno.
धर्म तथा फ़िल्म पत्रिका में समावेशन के लिए इसे अधिकृत प्रबंधक के द्वारा स्वीकार किया गया है।
धर्म तथा फ़िल्म पत्रिका में समावेशन के लिए इसे अधिकृत प्रबंधक डिजिटल कॉमन्स @ यूएनओ (Digitalcommons@uno.) के द्वारा स्वीकार किया गया है।
अधिक जानकारी के लिए, कृपया सम्पर्क करेंः
unodigitalcommons@unomaha.edu

University of Nebraska Omaha
नेब्रास्का विश्वविद्यालय ओमाहा

क्या स्लमडॉग मिलियनेयर *रामायण* का पुनर्कथन है?

सार-संक्षेप (मूलतथ्य)

क्या बैनर (पताका) पर राम तथा सीता का चित्र तथा *"रामायण"* शब्द ही स्लम डॉग मिलियनेयर और महान हिन्दु महाकाव्य के बीच एकमात्र कड़ी है? इस लेख में हमने फ़िल्म के उन तत्त्वों की समीक्षा की है जो *"रामायण"* के तत्त्वों से मेल खाती हैं। इनमें कोई रूबरू परस्पर-संबंध नहीं है, और वास्तव में दोनों के बीच कुछ संबंध तो दर्पण-प्रतिबिम्ब हैं। तथापि इन दोनों के बीच पारस्परिक-संबंध तथा प्रभावों से इस बात के संकेत मिलते हैं कि यह फ़िल्म *"रामायण"* का पुनर्कथन है- ऐसा माना जा सकता है। हालाँकि हम ये भी स्वीकार करते हैं कि इस फ़िल्म की कुछ विशेषताएँ ऐसी हैं जो कुछ लोगों को अप्रिय लग सकती हैं और उनका यही मत इस विचार को खारिज करेगा कि *"स्लम डॉग मिलियनेयर"* इस महाकाव्य का पुनर्कथन है।

संकेतशब्द

हिन्दुत्व, *रामायण*

रचनाकारों का संक्षिप्त विवरणः

विलियम एल. ब्लाइज़ेक नेब्रास्का विश्वविद्यालय, ओमाहा में दर्शनशास्त्र तथा धर्मशास्त्र के प्राध्यापक हैं। ये "धर्म तथा फ़िल्म" पत्रिका के संस्थापक सम्पादक तथा "द ब्लूम्सबरी कम्पेनियन टू रिलीजियन एण्ड फ़िल्म" (The Bloomsbury Companion to Religion and Film) के सम्पादक हैं।

मिशेल मेरी डुमारे नेब्रास्का विश्वविद्यालय (ओमाहा) में धर्मशास्त्र तथा मूल अमेरिकी अध्ययनशास्त्र में सह-प्राध्यापक हैं। ये "धर्म तथा फ़िल्म" पत्रिका की भूतपूर्व सम्पादिका तथा "चेंजिंग माइन्ड्सः माइन्ड, कॉनशियसनेस एण्ड आइडेंटिटी इन पतंजलि'स् योगसूत्र एण्ड कॉगनिटिव न्यूरोसाइन्स" (2008) की लेखिका तथा "संस्कृत-साधुता 'गुडनेस ऑफ संस्कृत': एसेज़ इन ऑनर ऑफ प्रोफेसर अशोक अक्लुजकर"(2012) की सम्पादिका हैं। इसके साथ- साथ, डॉ. ब्लाइज़ेक और डॉ. डुमारे "हम क्या पढ़ाते हैं जब हम धर्म और फ़िल्म पढ़ाते हैं?"(What are we teaching when we teach religion and Films?) के सह-लेखक हैं, धर्म और फ़िल्म के अध्यापन में, ग्रेग वाटकिन्स, एड. (ed) – (2008); "फ़िल्म की क्षमता/धर्म की क्षमता, (The Power of Film/The Power of Religion), अवान्का अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस सिनेमा (Avanca International Conference Cinema); के कार्यक्रम में (July, 2010); तथा "धर्म तथा फ़िल्म पत्रिका माध्यम से धर्म तथा फ़िल्म अध्ययन", धर्म, वॉल्यूम.41, अंक 3(2011)

यह लेख धर्म तथा फ़िल्म पत्रिका में उपलब्ध हैः http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol19/iss2/1

ब्लाइज़ेक तथा डुमारे : क्या स्लम डॉग मिलियनेयर *रामायण* का पुनर्कथन है?

रामायण में कही गयी राम–सीता की कहानी भारतीय संस्कृति की कहानियों में से सर्वाधिक प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय कहानी है। उत्तर भारत में, दीपावली का पर्व, श्रीराम के वनवास से लौटकर कोशल राज्य के राजा के उपयुक्त पद पर प्रतिष्ठित होने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। जब भारत सरकार के स्वामीत्व वाले दूरदर्शन (टी.वी.) चैनल ने इस कथा का धारावाहिक प्रस्तुतीकरण किया तो लाखों भारतीय प्रति सप्ताह राम और सीता के अपूर्व अनुभवों को देखने के लिए मंत्रमुग्ध होकर अपने टेलीविज़न सेट से चिपक जाते थे।

हिन्दुत्व (सनातन धर्म)[1] के दो महान महाकाव्यों में से *रामायण* एक है। संस्कृत में इसकी रचना का श्रेय संतकवि वाल्मीकि को जाता है, इसकी मौखिक रचना की कालावधि पन्द्रहवीं (15^{th}) शताब्दी से लेकर चौथी (4^{th}) शताब्दी ईसापूर्व (BCE) तक विस्तृत है। परम्परा के अनुसार *रामायण* को इतिहास, अथवा हिस्ट्री, साथ ही साथ महाकाव्य माना जाता है, धार्मिक कथाओं का भंडार, आदर्श आचरण तथा शासन संबंधी उपदेश, और संभवतः सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, यह धर्म (नीति–परायणता, सत्य, कर्तव्य) के उपदेशों का स्रोत है। यह संसार की महानतम् प्रेम गाथाओं में से भी एक है।

संभवतः *रामायण* के विस्तार के कारण, तथा इसकी महान लोकप्रियता के लक्षणों के कारण, *रामायण* के विभिन्न संस्करण मिलते हैं, यद्यपि इस कथा की प्रमुख घटनाँए सामान्य तौर पर मेल खाती हैं। यह कथावाचक अथवा प्रवक्ता के व्यक्तिगत रुचि पर निर्भर करता है कि वह कथा के कौन से अंशों का वर्णन करेगा और इन बातों पर भी कि वे परम्पराओं को बनाए रखें तथा श्रोताओं की रुचि तथा ज़रूरतों के अनुरूप हों। इस प्रकार से *रामायण* सम्पूर्ण भारत में, दक्षिण–पूर्व एशिया में तथा अंततः पूरे संसार में चारों ओर विस्तृत हो गया।

इस कथा को विभिन्न भाषाओं में तथा, नृत्य, संगीत, नाटक जैसे विभिन्न विधाओं में प्रस्तुत किया जाता है।

धर्म तथा फिल्म पत्रिका
Journal of Religion & Film, Vol.19 [2015], Iss. 2, Art-1.

रामायण के प्रमुख चरित्रों अथवा घटनाओं को बहुत सी चित्रकलाओं तथा मूर्तिकलाओं के द्वारा दर्शाया गया है। आधुनिक काल में *"रामायण"* को फिल्म तथा टेलीविज़न[2], तथा इंटरनेट[3] के माध्यम से भी दर्शाया गया है।

रामायण में राम, भाई लक्ष्मण तथा पत्नी सीता की कथा का वर्णन है। राम कोशल के राजा दशरथ के पुत्र हैं। राम स्वंय निश्चित रुप से महानायक हैं, परन्तु इससे परे उनका अवतार रूप अत्यन्त महत्वपूर्ण है, महान हिन्दु "देवता" (गॉड) विष्णु के अवतार- स्वरूप हैं। विष्णु 'धर्म' के संरक्षक (मर्यादित आचरण, नीति, न्याय, परायणता) माने जाते हैं। परम्पराएँ हमें यह बताती हैं कि जब जब धर्म की हानि होती है, भगवान विष्णु किसी न किसी रूप में अवतार ग्रहण करके धर्म की पुनःस्थापना करते हैं।[4] श्रीराम के युग में, 'धर्म' वास्तव में लगभग समाप्त होने को था। ऋषि तथा पुरोहितों के द्वारा किए जाने वाले यज्ञ-आहुतियों को राक्षस भंग किया करते थे। विस्तृत भूखण्ड विनष्ट हो चुके थे, यद्यपि कोशल-राज्य तथा विशेष रूप से राजधानी अयोध्या अच्छी स्थिति में थे। ऐसे में सबसे संकटपूर्ण समस्या दस सिरों वाला राक्षस रावण था, जिसने अपने भाइयों के साथ मिल कर, कठोर 'तप' के द्वारा अद्‌भुत शक्ति अर्जित की थी तथा अब स्वयं 'देवताओं' को भयभीत कर रहे थे। 'धर्म' की स्थापना के लिए रावण को परास्त करना आवश्यक था, इसी कारण विष्णु, मानव रूप में राम बने चूँकि रावण ने दीन-हीन दिखाई देनेवाले मनुष्यों के विरुद्ध कभी भी सुरक्षात्मक शक्ति की याचना नहीं की थी, इसलिए विष्णु का मनुष्य रूप में अवतार ग्रहण करना, उसे परास्त करने का एकमात्र उपाय था।

ऋषि विश्वामित्र से प्रशिक्षण प्राप्त करके राम तथा उनके भाई लक्ष्मण ने किशोरावस्था से ही समाज में नीति-परायणता की प्रक्रिया तथा धर्म की स्थापना की शुरुआत कर दी थी।

ब्लाइज़ेक एण्ड डुमारेः क्या स्लम डॉग मिलियनेयर *रामायण* का पुनर्कथन है?

युवा होने पर राम ने मिथिला के शासक, राजा जनक की रूपवती पुत्री सीता को देखा, उसके प्रति प्रेमभाव से आकर्षित हुए तथा स्वंयवर में विजयी बने। यद्यपि सीता एक रूपवती तथा तेजस्विनी राजकुमारी से भी अधिक विशिष्ट थी। वह तो धरती–माता की पुत्री तथा देवी (गॉडेस) लक्ष्मी की अवतार थी, जिसे सौभाग्य, धन–वैभव तथा सौन्दर्य की देवी माना जाता है। लक्ष्मी तो विष्णु पत्नी भी है। इसलिए यह उनका प्रारब्ध है कि राम और सीता परस्पर प्रेम से आकर्षित हुए औंर इस पृथ्वी लोक में विवाह–बंधन में बँध गए।

जब वयोवृद्ध राजा दशरथ ने सत्ता त्यागने का संकल्प लिया तब उन्होंने राम को राजा बनाने का निश्चय किया। ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण, राज सिंहासन के न्यायोचित उत्तराधिकारी राम ही थे। कोशल–राज में वे अत्यन्त लोकप्रिय भी थे, और राज्य की प्रजा ने राजा दशरथ के उत्तराधिकारी के रूप में उनके चुनाव का हार्दिक स्वागत किया। यद्यपि दशरथ की तीन पत्नियों से चार पुत्र थे और दशरथ की पत्नी कैकयी चाहती थी कि उसका पुत्र राजा बने। अतीत में एक बार कैकयी ने कठिन समय में राजा की सहायता की थी, तब दशरथ ने वचन दिया था कि वह अपनी इच्छानुसार दो वरदान माँग सकती है। अब कैकयी दशरथ से दो वरदान माँगती है। पहला – राम को अयोध्या से चौदह वर्ष का वनवास, तथा दूसरा उसके पुत्र भरत को, दशरथ, राजा के रूप में नामांकित करें।

यद्यपि दशरथ इन वरदानों को प्रदान करने के विचार से ही अत्यन्त व्याकुल हो जाते हैं, परन्तु फिर भी दिए हुए वचन को निभाना उनके लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। इसलिए उन्होंने राम को राज्य से निर्वासित कर दिया तथा भरत को राजा घोषित किया। इस आशंका से विचलित हो कर कि उनके पुत्र राम अब चौदह वर्षों तक वनों में निर्वासित जीवन व्यतीत करेंगे, दशरथ मूर्छित होकर धराशायी हो, मृत्यु को प्राप्त हो गए।

राम ने अयोध्या को त्याग दिया, सीता तथा लक्ष्मण से रह जाने का बहुत आग्रह करने के बावजूद, वे दोनों वनवास में उनके साथ चल दिए। राम ने अपने वनवास को अत्यन्त धैर्य के साथ स्वीकारा,

धर्म तथा फिल्म पत्रिका
Journal of Religion & Film, Vol.19 [2015], Iss. 2, Art-1.

क्योंकि अपनी इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति की तुलना में अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना अधिक महत्त्वपूर्ण है। हालाँकि भरत अपनी माता के कुचक्र से हताश होकर राम का अनुसरण करते हुए वन को जाते हैं और उन्हें वापस लौटकर राजा के पद पर आसीन होने के लिए अनुनय-विनय करते हैं। राम इस प्रस्तावना को अस्वीकार करते हैं। भरत राम के वनवास की समाप्ति होने तक अयोध्या के प्रतिशासक के रुप में कार्य करने के लिए अयोध्या लौट आते हैं।

जब राम, सीता और लक्ष्मण वनवास में थे तब लंका के राजा ने अपनी बहन शूर्पनखा से सीता की सुन्दरता का वर्णन सुना। सीता की सुन्दरता पर मुग्ध रावण ने तत्काल ही उसका अपहरण करने का एक षड्यंत्र रचा। रावण के मामा मारीच ने सोने के हिरण का छद्मवेश धारण किया, जिसे देख सीता ने राम से उस हिरण का पीछा करने की प्रार्थना की। सीता की सुरक्षा के लिए राम लक्ष्मण को वहीं छोड़कर चले गए, परन्तु जब उन दोनों ने कुछ ऐसी आवाज़ें सुनी मानो राम सहायता के लिए उन्हें पुकार रहे हों, तब सीता ने लक्ष्मण को निर्देश दिया कि वह जा कर राम की सहायता करें। ऐसे में, जब दोनों भाई दूर जा चुके थे, तब रावण एक साधु का छद्मवेश धारण कर आया और सीता को उसके सुरक्षा घेरे (लक्ष्मण रेखा) के बाहर आने को बाध्य किया। जैसे ही यह घटना घटी रावण वापस अपने वास्तविक रूप में आ गया, और सीता को बलपूर्वक पकड़कर लंका लौट गया, जहाँ पर उसे बंदी अवस्था में रखा गया। बंदी अवस्था में रहते समय सीता ने रावण के प्रेम-प्रस्तावों को तथा उसे आतंकित करने के हर-संभव प्रयासों को पूरी तरह से नकार दिया।

सीता के अपहरण की सूचना पाते ही, राम और लक्ष्मण उसके उद्धार के लिए निकल पड़े। ऐसा करते हुए उन दोनों को अनेक कठिन तथा साहसिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। राम को हनुमान 'देवता' की भक्ति और श्रद्धा भी प्राप्त हुई। हनुमान ने लंका में सीता की खोज करने में राम की मदद की। एक महायुद्ध हुआ जिसमें रावण अंततः पराजित हुआ। राम और सीता का पुनर्मिलन हुआ तथा कोशल राज के न्यायोचित शासक बनने के लिए राम राज्य में लौट गए।[5]

ब्लाइज़ेक तथा डुमारे : क्या स्लम डॉग मिलियनेयर *रामायण* का पुनर्कथन है?

रामायण की लोकप्रियता के कई कारण हैं। निश्चित रूप से यह प्रेम तथा असाधारण साहसिक कार्यों का महाकाव्य है। यद्यपि इसके अतिरिक्त इस महाकाव्य में सर्वाधिक रूप से, राम हमें एक उत्कृष्ट प्रेरणास्रोत प्रदान करते हैं। राम न केवल भारतीय संस्कृति के मूलभूत आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं, उदाहरणतया स्वधर्म का पालन करना, अपितु वे उन आदर्शों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जो अन्य संस्कृतियों के साथ साझा हैं। राम ने ऐसे आदर्शों का उदाहरण प्रस्तुत किया जिनमें अपनी प्रतिज्ञा का पालन करना, चाहे उसके परिणाम कितने ही दुःखदायी क्यों न हो; अपने माता–पिता के प्रति आज्ञाकारिता; तथा अपने से बड़ों का और गुरुओं का सम्मान करना – अंतर्निहित हैं। राम दयालु हैं, विषम परिस्थितियों तथा बाधाओं का सामना करते हुए असीम धैर्य का प्रदर्शन करते हैं, भक्ति भाव से परिपूर्ण हैं, तथा अंततः अपने लक्ष्य तथा कर्तव्य के प्रति प्रतिबद्ध हैं। एक मिली–जुली संस्कृति के संदर्भ में, बुराई पर विजय प्राप्त कर के राज्य में शान्ति और न्याय की स्थापना का प्रयास करना, उनका सबसे महत्त्वपूर्ण आदर्श माना जा सकता है। विष्णु के अवतार के रूप में, रावण को पराजित करना, बुराई पर विजय प्राप्त करना तथा धर्म की स्थापना करना– हिन्दु धर्म के संदर्भ में राम की नियति है। अतः राम का प्रारब्ध इस महाकाव्य का महत्त्वपूर्ण अंश है।

स्लम डॉग मिलियनेयरः क्या रामायण की प्रतिकृति है?

स्लमडॉग मिलियनेयर फिल्म को *रामायण* का पुनर्कथन कोई क्यों मानेगा? जमाल (देव पटेल), फिल्म का नायक, मुम्बई की गंदी बस्ती में रहने वाला एक लड़का है– एक "स्लमडॉग" (बस्ती का कुत्ता) है, कोई राजकुमार नही है। वह मुम्बई के एक कॉल सेंटर में चाय पिलाने का काम करता है। "कौन बनेगा करोड़पति" जैसे लोकप्रिय 'शो' (कार्यक्रम) में भाग लेने का अवसर मिलता है, तो वह आशा करता है कि लम्बे समय से बिछुड़ी हुई प्रेमिका–लतिका (फ्रीडा पिंटो), पर्दे पर देख उसे मिलने चली आएगी।

'शो'(कार्यक्रम) के प्रस्तुतकर्ता प्रेम कुमार (अनिल कपूर) को विश्वास है कि जमाल छल कर रहा है और वे उसे गिरफ़्तार करवा देते हैं। यह जानने के लिए कि जमाल किस प्रकार से धोखाधड़ी कर रहा है, उस पर अत्याचार किए जाते हैं। जब पुलिस को विश्वास हो जाता है कि जमाल धोखेबाज़ नहीं है, वह 'शो' (कार्यक्रम) में वापस आता है और बीस करोड़ रुपए जीत लेता है। लतिका इस कार्यक्रम को देखती है और अंत में जमाल के पास पहुँच जाती है। इस विषय संक्षेप में, *रामायण* के साथ कहीं से भी सादृश्य दिखाई नहीं देता। इसके अतिरिक्त इस फिल्म में जमाल और उसका भाई सलीम, चाहे नाम मात्र के लिए ही क्यों न हों, मुस्लिम हैं। फिल्म के निर्देशक डैनी बॉयल तो भारतीय भी नहीं हैं। फिर कैसे यह आधुनिक फिल्म किसी भी प्रकार से *रामायण* को प्रतिबिम्बित कर सकती है?

दर्पण इस बात को समझने में मदद करते हैं कि *स्लमडॉग मिलियनेयर रामायण* का आधुनिक पुनर्कथन है। ऐतिहासिक स्तर पर, भारत में आठवीं सदी (ईस्वी) से ही हिन्दु-मुस्लिम इतिहासों का सम्मिश्रण शुरू हो चुका था। सदियों से भारत साम्प्रदायिक संघर्षों तथा परस्पर एकता के दौर से गुज़रा है। परम्परागत तौर पर दोनों में अलगाव होते हुए भी, प्रकट रूप में दोनों अपरिवर्तनीय ढंग से आपस में जुड़े हुए हैं, जैसे एक चेहरा और दर्पण में दिखाई देने वाला उसका प्रतिबिम्ब। भारतीय फिल्म निर्देशक लवलीन टंडन तथा डैनी बॉयल द्वारा निर्देशित फिल्म *"स्लमडॉग मिलियनेयर"* की सशक्त अभिव्यक्ति कहीं न कहीं भारतीय इतिहास की जटिलताओं तथा वर्तमान युग की विविधताओं के प्रतिबिम्बन पर आधारित है।

पटकथा-लेखक साइमन ब्यूफॉय के अनुसार, *स्लमडॉग मिलियनेयर* फिल्म एक प्रकार से मुम्बई शहर को ही प्रतिबिम्बित करता है। उपन्यास "क्यू एण्ड ए" (Q & A) जिस पर यह फिल्म एक हद तक आधारित है, इसके प्रमुख चरित्र का नाम **राम मोहम्मद थॉमस** है, जो कि उपन्यासकार विकास स्वरूप की इस इच्छा को प्रतिबिम्बित करता है कि उसका कथा-नायक "एक आम भारतीय की छवि को प्रस्तुत करे, जो लगे कि वह हिन्दु, मुस्लिम और ईसाई भी है।"[6]

ब्लाइज़ेक तथा डुमारे : क्या स्लम डॉग मिलियनेयर *रामायण* का पुनर्कथन है?

इसलिए पटकथा-लेखक साइमन ब्यूफॉय और निर्देशकों ने इस चरित्र का नाम बदल दिया। फिल्म में जमाल के. मलिक और उसके भाई सलीम को साफ तौर पर मुस्लिम दिखाया गया है, यद्यपि यह दिलचस्प बात है कि सलीम, फिल्म का एकमात्र ऐसा चरित्र है जो प्रकट रूप से कुछ धार्मिक प्रथाओं का पालन करता है। फिल्म के अन्तिम भाग में एक गुंडे (गैंगस्टर) के रूप में कामयाबी हासिल करने से पहले दुआएँ माँगता है। सलीम ही है जो गोलियों की बौछारों से घायल होकर मरते हुए अस्फुट स्वर में बड़बड़ाता है कि 'ईश्वर महान है।' जहाँ तक जमाल का किरदार है, और कुछ न सही पर ज़ाहिर है कि वह धर्म के प्रति कड़वाहट से भरा हुआ है। एक जगह पर वह कहता है कि "यदि राम और अल्लाह न होते तो मेरी माँ आज भी मेरे साथ होती।" "भागने न पाए, वो मुस्लिम है" चिल्लाते हुए हिन्दुओं की भीड़ के हाथों उसकी माँ की मौत हुई थी अर्थात् 'स्लमडॉग' की कहानी को रूप-रेखा प्रदान करने वाले प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम (कुइज़ शो) में हिन्दु देवता राम पर पूछे गए एक महत्त्वपूर्ण सवाल का जवाब जमाल दे सकता था।

यद्यपि हिन्दु और मुस्लिम, तथा इस फिल्म और महान हिन्दु महाकाव्य *रामायण* के बीच संपर्क इससे भी कहीं अधिक गहरा है। जैसा कि 'टॉक-शो' के प्रस्तुतकर्त्ता प्रेम कुमार (अनिल कपूर) इस फिल्म में टिप्पणी करते है, "धर्म! रोचक प्रसंग है!"

प्रमुख चरित्र का नाम तथा पृष्ठभूमि के अतिरिक्त 'स्लमडॉग' फिल्म तथा उपन्यास कई महत्त्वपूर्ण आयामों में, एक-दूसरे से अलग हैं। ये भिन्नताएँ फिल्म के कथानक के निर्माण में न केवल मदद करती हैं बल्कि, 'स्वरूप' के अपने शब्दों में "रोचक है", एक ऐसी प्रेम-कथा की रचना करती है, जो उपन्यास से बहुत भिन्न है।[7] पटकथा लेखक साइमन ब्यूफॉय ने टिप्पणी की है कि "मैं यह अनुभव करता हूँ कि *"स्लमडॉग मिलियनेयर"* का लहज़ा आखिरकार हम फिल्म- निर्माताओं की रचना न होकर खुद शहर (मुम्बई) द्वारा रचित है। हम उन लोगों से प्रेरित हुए जो बिना किसी शर्त के, खुशी और ग़मों के बीच ज़िंदगी को जश्न तरह जीते हैं।"[8]

इतिहास और साथ ही महान् हिन्दु महाकाव्य, जो इतिहास का ही हिस्सा है, मुम्बई के लोगों को बहुत गहराई से प्रभावित करती है, बॉलीवुड की 'मसाला' तथा कला- फिल्में वहाँ बनती हैं, और वर्तमान में गैर-भारतीय तथा भारतीय फिल्म-निर्माता तथा दर्शक भी मुम्बई के लोगों तथा उनकी कहानियों में खुद को सराबोर कर देते हैं। विशेष रूप से, इस फिल्म की प्रेम-कहानी, मुम्बई की है, पश्चिम के 'रोमियो-जूलियट" की नहीं बल्कि राम और सीता की है। और फिल्म में इस प्रेम-कहानी का एक लम्बा इतिहास है।

सन् 1913 से 'महाभारत' और *रामायण* ने भारतीय फिल्म-निर्माताओं पर अपना भरपूर प्रभाव डाला :

एक महत्त्पूर्ण कड़ी जो दोनों महाकाव्यों तथा भारतीय चलचित्रों की मुख्यधारा में विद्यमान है..... इसे विचार-संप्रेषण (कम्यूनिकेशन) की धारणा के संदर्भ में भली-भांति समझा जा सकता है। ये महाकाव्य मौखिक रूप से प्रसारित हुए तथा रीति-रिवाज़ों और लोक-कलाओं के प्रदर्शन से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे। भारतीय संस्कृति के मर्म में स्थापित होने के कारण, विभिन्न तौर-तरीकों तथा विधाओं के रूप में स्थानीय लोक-कथाओं में इन्हें अभिव्यक्त किया गया। इससे विभिन्न प्रकार की कथाओं तथा लोक-नाटक आदि के प्रदर्शन के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा मिला जो इन महाकाव्यों के भव्य साँचे में सशक्त रूप से संस्थापित थे ..... भारतीय लोकप्रिय फिल्मों पर आधारित व्याख्यान, उसी प्रकार महाकाव्य के मूल विषय, और विभिन्न फिल्मों के निर्माण की तुलना विविधतापूर्ण महान कथाओं तथा विभिन्न विधाओं के द्वारा उनके प्रदर्शन से की जा सकती है।[9]

अतः जब ब्यूफॉय यह पता लगाने के लिए मुम्बई गए कि वे 'क्यू एण्ड ए' (Q & A) का रूपांतर पटकथा के रूप में किस प्रकार कर सकते हैं, तब उन्होंने "इसका उत्तर अपने आस-पास की संस्कृति में खोजा।"[10] अपने चारों ओर की संस्कृति का वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया है- "अत्यन्त आवेशपूर्ण अत्यन्त रोमानी है।"[11] यह स्थान, *रामायण* के अनके पुनर्कथनों द्वारा, चाहे फिल्म संबंधी हो अथवा अन्यान्य विधा हो, कहीं गहरे तक पैठा हुआ है।

ब्लाइज़ेक तथा डुमारे : क्या स्लम डॉग मिलियनेयर *रामायण* का पुनर्कथन है?

इसलिए हम 'स्लमडॉग' के कथानक तथा चरित्रों को महाकाव्यों का आधुनिक पुनर्कथन, चाहे वह काफी हद तक बाहरी ही क्यों न हो, कथानक में उल्लेखनीय नवीन परिवर्तन होते हुए भी, फिर भी उन महाकाव्यों से प्रेरणा ग्रहण करते हुए तथा उन महाकाव्यों के पारम्परिक प्रदर्शन विधाओं की सीमाओं के अंतर्गत ही है। अब फिल्म की ओर ध्यान देते हुए जैसा कि पहले भी उल्लेख किया जा चुका है कि विशिष्ट अंतर होते हुए भी, सटीक न सही पर ऐसे समानान्तर अथवा वैकल्पिक तत्व हैं, जो महत्वपूर्ण हैं और दर्पण-समान *'रामायण'* को प्रतिबिम्बित करती है। प्राथमिक तौर पर सर्वप्रथम 'स्लमडॉग मिलियनेयर' का सामान्य कथानक है- *रामायण* के समान, जो प्रेम-कथा, साहसिक कार्यों तथा भाइयों के बीच सम्बन्ध के इर्द- गिर्द घूमती है। इस दृष्टिकोण से, यह जमाल की कहानी है, जिसके कई खतरनाक कामों में उसका भाई सलीम उसका साथ देता है। जमाल लतिका से प्रेम करने लगता है- विश्व की सबसे सुंदर लड़की-जिसका अपहरण कर लिया जाता है- पहले मामन लतिका को उसकी इच्छा के विरूद्ध कैद में रखता है, और अपने स्वार्थ के लिए उसका शोषण करता है, और उसके बाद जावेद- स्लम का गुंडा, लतिका को बतौर अपनी गर्लफ्रेंड रख लेता है। दोनों भाई लतिका की खोज में लगे रहते हैं। अपहर्ता से उसे मुक्त करते हैं- मामन और जावेद, दोनों ही इस घटना के प्रमुख चरित्र हैं-तथा इन दुष्टों का नाश करते हैं।

रामायण की भाँति, न्याय की जीत होती है, अलबत्ता कुछ हानि तथा बलिदानों के बादलों से आच्छादित होते हुए भी, इसका अंत सुखदायी है। इसलिए इस विषय में तर्क दिया जा सकता है कि राम और जमाल, लक्ष्मण और सलीम, सीता और लतिका तथा मामन, जावेद तथा रावण के बीच एक सामान्य समानान्तरता विराज रही है।[12]

सलीम का जटिल चरित्र इस व्याख्या के संदर्भ में एक संभावित चुनौती है। अक़सर 'स्लमडॉग' में सलीम एक बहादुर, विश्वसनीय तथा संरक्षक भाई का दायित्व निभाता है, जिस कारण उसकी तुलना *रामायण* में लक्ष्मण के चरित्र से की जा सकती है।

धर्म तथा फिल्म पत्रिका
Journal of Religion & Film, Vol.19 [2015], Iss. 2, Art-1.

यद्यपि सलीम लक्ष्मण की भाँति हमेशा निष्ठावान, दृढ़ तथा ईमानदार चरित्र का धनी नहीं है। वास्तव में कई मौकों पर सलीम लतिका के प्रति अुनचित व्यवहार करता है। मामन से बचकर भागने के लिए वह लतिका का हाथ छोड़ ट्रेन पर कूदता है, परिणामतः उसे दोबारा बंधक बना लिया जाता है यद्यपि फिल्म के अगले भाग में, जब लतिका उन्हें मिल जाती है, तो उसे मामन से बचाने में सलीम जमाल की मदद करता है, मामन की हत्या कर एक दुष्ट खलनायक का अंत कर देता है। दुर्भाग्य से सलीम लतिका पर अपना अधिकर जमाता है, जमाल को बलपूर्वक हटा देता है, उसके बाद लतिका को दूसरे खलनायक जावेद के सुपुर्द कर देता है। परन्तु एक बार फिर, फिल्म में जब जमाल दोबारा सलीम से सम्पर्क करता है, तो वह अपने भाई और लतिका को मिलाने में मदद करता है। वह लतिका को जावेद के कब्ज़े से भाग निकलने में मदद करता है तथा अपने सभी गलत कामों पर पश्चाताप व्यक्त करता है। अपने जीवन को दाँव पर लगाते हुए, वह जावेद को मार देता है, इस प्रकार बुराई का अंत होता है। इस प्रकार सलीम का चरित्र आश्चर्य–जनक ढंग से दर्पण–प्रतिबिम्ब है। फिल्म के अंत में उसकी जुबान पर धर्म की बातें हैं, जबकि उसने हमेशा धार्मिक सिद्धान्तों के विपरीत ही आचरण किया है। लक्ष्मण की तरह वह एक निष्ठावान भाई है, परन्तु वह उसके विपरीत भी है– जमाल और लतिका से विश्वासघात करने में, तथा जावेद के साथ स्वेच्छापूर्वक संबंध रखकर, वह अपहरणकर्ता–रावण रूपी राक्षस के चरित्र के निकट आ जाता है। लक्ष्मण के विपरीत, वह जीवित नहीं रहता, परन्तु रावण की तरह, *रामायण* के कुछ संस्करणों में, शायद यह अनुभूति है कि यह जटिल चरित्र मृत्यु में मुक्ति या फिर सुधार और शांति प्राप्त करता है।

'*रामायण*' से जुड़े अन्य संबंध अधिक स्पष्ट हैं, यद्यपि पुनः उनमें भी असमानताएँ विद्यमान हैं। '*रामायण*' में केवल एक ही प्रमुख अपहर्ता है–रावण। '*स्लमडॉग*' में दो अपहर्ता हैं।

ब्लाइज़ेक तथा डुमारे : क्या स्लम डॉग मिलियनेयर *रामायण* का पुनर्कथन है?

परन्तु दोनों ही अपहरणकारी मारे जाते हैं, इस प्रसंग की ओर संकेत करते हैं कि समूचे समाज में चाहे न्याय तथा शांति बहाल न हो पाये, परन्तु अपहरणकारियों से मुक्ति प्राप्त कर, उनके कब्ज़े से मुक्त होकर कम से कम वे तो एक बेहतर ज़िंदगी जी सकते हैं। वास्तव में, बाल-उत्पीड़न तथा उनके साथ दुर्व्यवहार को प्रस्तुत करके, हमारे सम्मुख फिल्मकार 'अधर्म' का, विश्रृंखलता तथा अशुभ तो धर्म का विपर्यय है, साथ ही साथ उनको आवश्यक रूप से पराजित करना और मिटा देना जो अधर्म का आचरण करते हैं – इसका सशक्त प्रस्तुतीकरण करते हैं।

लतिका और सीता के बीच संबंध तो काफी स्पष्ट है, बल्कि शुरू में तो सर्वथा सीधा-सपाट लगता है। सीता के समान लतिका भी अत्यन्त सुंदर है तथा जमाल के साथ उसका पूर्वनिर्दिष्ट संबंध-तत्त्व आद्योपांत अत्यन्त सशक्त है। (नीचे देखिए) मामन के द्वारा बंदी अवस्था में रहते हुए भी लतिका किसी तरह अक्षत रहती है, ठीक उसी प्रकार जैसे सीता लंका में बंदी अवस्था में समय बिताती है। संभावनाओं के विपरीत, न तो उसके साथ बलात्कार किया गया, न ही उसे विकलांग बनाया गया, न ही उसे वेश्यावृत्ति में झोंका गया। बाद में अवश्य लतिका पीड़ित होती है- इस मायने में कि यही उसकी 'अग्निपरीक्षा' थी। कई वर्षों तक मामन के साथ रहने के बाद जमाल के साथ एक सामान्य पुनर्मिलन तथा उस बिंदु पर सुखद अंत के बदले में लतिका जावेद के कब्ज़े में जीने को विवश हो जाती है। और यहाँ सीता से उसकी तुलना करते हुए कई जटिलताएँ दिखाई देने लगती हैं। जावेद के साथ बिताए समय के दौरान, न तो वह अक्षत रह पाती है, वह परिस्थितियों के सामने सर्वथा हार मान लेती है। इस घटना में हमें सीता के बिम्ब का दर्पण-प्रतिबिम्ब अथवा विरोधी प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। दिलचस्प बात यह है कि, मानो इस तथ्य पर बल देने के लिए, लतिका जावेद के साथ जिस घर में रहती है वह चारों ओर दर्पण तथा प्रतिबिम्बों से भरा हुआ था। जब कई वर्षों बाद जमाल की लतिका से वहाँ मुलाकात होती है तो पहले-पहले तो लतिका, जमाल का 'एक बेहतर ज़िंदगी के सपने' पर विश्वास करने को अनुत्सुक है और जमाल के साथ जाना तथा उसके साथ ज़िंदगी बिताने से भयभीत है, यद्यपि जमाल उसे 'प्रेम' का भरोसा देता है।

धर्म तथा फिल्म पत्रिका
Journal of Religion & Film, Vol.19 [2015], Iss. 2, Art-1.

आखिरकार सलीम की मदद से, लतिका सफलतापूर्वक भाग निकलती है, तथा जमाल के पास सुरक्षित पहुँच जाती है। शायद, अंत में सलीम की ही तरह लतिका का चरित्र भी पहले की तुलना में अधिक सूक्ष्म दिखाई देता है। एक रूपवती, अपहृत नारी जिसे उद्धार की अपेक्षा है– लतिका का चरित्र उससे भी कहीं अधिक गहरा है। उसकी सुंदरता, भक्ति तथा पवित्रता के साथ ही साथ उसकी हताशा तथा शोषण की घटनाओं को दर्शा कर फिल्म में उसका किरदार मनुष्यों में निहित उदात्तता तथा कैसे वास्तविक जीवन में इन्हें उछाला जा सकता है, और फिर उनसे बच निकलने की अपेक्षा और ज़रूरत– चाहे वह प्रेम के माध्यम से हो या फिर किसी दैवी कृपा से अथवा अन्य किसी साधन से–की ओर संकेत करता है। अतंतः सीता और लतिका के चरित्र की बारीकियाँ अक़्सर दर्शकों की समझ से परे ही रह जाती हैं।

अब प्रमुख चरित्र जमाल के संदर्भ में सवाल उठता है तथा राम के चरित्र के साथ क्या कोई संभावित सादृश्य है? पुनः सतह पर एक दर्पण या विरोधी बिम्ब है। जैसा कि पूर्व में देखा गया है कि राम राजपुत्र हैं, जो आगे चलकर एक न्यायप्रिय राजा बनते हैं। वे एक देवता, भगवान तथा विष्णु के 'अवतार' तथा धर्म के रक्षक हैं। इसके विपरीत जमाल एक 'स्लमडॉग' है और उसका जन्म एक मुस्लिम परिवार में होता है। इन विशाल असमानताओं को देखते हुए यह समझने योग्य है कि राम और जमाल, 'स्लमडॉग मिलियनेयर' तथा 'रामायण' के बीच इस प्रकार की तुलना, जैसा कि हम कर रहे हैं– बहुसंख्यक हिंदु सिरे से इसे नक़ार देंगे।[14] यद्यपि हम यदि इन सतही तुलनाओं से परे देखें तो समानताओं के कुछ संभावित बिंदु दृष्टिगोचर होते हैं। राम की तरह जमाल एक महान योद्धा नहीं है परन्तु अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उसी प्रकार की दृढ़ता का प्रदर्शन करता है। जमाल चतुर है, अपने अनुभवों से सीखकर, सफलतापूर्वक उन पर अमल करता है और अंत में राम की तरह विजयी होता है।

ब्लाइज़ेक तथा डुमारे : क्या स्लम डॉग मिलियनेयर *रामायण* का पुनर्कथन है?

जमाल और राम–दोनों ही प्रेम में अत्यधिक आसक्त थे। अपहरणकर्ताओं के हाथों अपनी स्त्री को खो देते हैं। अपने प्रेम को पाने की खोज में लगे रहते हैं। कई खतरनाक हादसों के शिकार होते हैं, कई विपत्तियों और दुःखों का सामना करते हुए अपने पूर्व–निर्दिष्ट प्रेमिका से उनका पुनर्मिलन होता है। वास्तव में, *रामायण* और स्लमडॉग–दोनों ही लोगों के लिए प्रेरणादायी होने का एक कारण, यह संदेश है कि भक्ति और प्रेम के द्वारा सभी पर विजय प्राप्त किया जा सकता है।

साथ ही इनमें अन्य अनेक सूक्ष्म समानताएँ भी हैं। चाहे शिक्षण के लिए हो अथवा आवश्यकता, फिल्म तथा महाकाव्य–दोनों में ही हमें निर्वासन का प्रसंग दिखाई देता है। 'रामायण' में, ऋषि विश्वामित्र किशोर बालक राम तथा लक्ष्मण को घर से ले जाते हैं। वे एक साथ कई क्षेत्रों में पर्यटन करते हैं तथा ऋषि प्रत्येक स्थान के इतिहास का वर्णन भी करते हैं। इन स्थानों पर राम को अपनी बुद्धिमत्ता, क्षमता तथा साहस का प्रमाण प्रस्तुत करने का अवसर भी मिलता है। दूसरी ओर जमाल और सलीम आगरा चले जाते हैं और वहाँ न केवल ज़िन्दा रहने के दाँव–पेंच सीखते हैं अपितु मनुष्य–स्वभाव, रीति–रिवाज़ और रुपये–पैसे के विषय में भी जानकारी प्राप्त करते हैं। वे इन विशिष्ट पाठों में अत्यन्त सफलतापूर्वक कुशलता हासिल करते हैं तथा इस दौरान जो अनुभव उन्हें होते हैं, उसके परिणामस्वरुप बाद में 'कुइज़–शो' (प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम) में जमाल प्रश्नों के सही जवाब दे पाता है। एक बात तय है कि जमाल और सलीम अपनी चतुराई से जीवन जीते हैं, यद्यपि यह तर्क भी दिया जा सकता है कि उच्छृंखलता से जीते हैं– राम तथा लक्ष्मण के नैतिक मूल्यों के प्रति सच्चाई से असाधारण विरोधिता है। फिर भी आखिरकार लतिका को ढूँढ निकालने के लिए ज़िन्दा बचे रहना अत्यन्त ज़रूरी है। इसके अतिरिक्त, किसी वयस्क के मार्ग–दर्शन अथवा औपचारिक शिक्षा (ऋषि की बात तो छोड़ ही दीजिए) के अभाव में, जमाल इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त करता है कि बाद में पुलिस इन्स्पेक्टर भी स्वीकारता है कि वह 'विचित्र रूप से विश्वसनीय' है। इस ज्ञान की विशेषता–अनुभव, अनुमान तथा स्मरणशक्ति पर आधारित है, जिनका प्रयोग फिल्म के अंतर्गत 'कुइज़–शो' में बेहतरीन ढंग से दर्शाया गया है।

धर्म तथा फिल्म पत्रिका
Journal of Religion & Film, Vol.19 [2015], Iss. 2, Art-1.

परम्परागत भारतीय प्रमाणों (ज्ञान के मान्य रुप) के अतंर्गत 'प्रत्यक्ष' (डाइरेक्ट परसेप्शन) और 'अनुमान' (इन्फरेन्स) के साथ 'स्मृति' (मेमोरी), ज्ञान को अमल में लाना, ज्ञान- प्राप्ति की दिशा में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए भी जमाल स्वयं को शिक्षित करता है। उन आधुनिक आधिकारिक पदस्थ व्यक्तियों के लिए एक समस्या उपस्थित हो जाती है जिनका उससे आकस्मिक सामना होता है जैसे कि 'गेम-शो' के प्रस्तुतकर्ता (होस्ट), पुलिस इन्स्पेक्टर तथा पुलिस अधिकारी जो पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के मूल्यों से अधिक परिचित थे। "प्रोफ़ेसर, डॉक्टर तथा वकील भी 60,000 की राशि के आगे कभी नहीं पहुँच पाते", ऐसा इंस्पेक्टर का कहना था, "तो भला एक 'स्लमडॉग' को कितनी जानकारी होगी?" "जवाब", जमाल ने उत्तर दिया "मैं इनके जवाब जानता था।" जहाँ एक ओर भारत उत्तरोत्तर शिक्षा की पाश्चात्य शैली तथा मूल्यों को समाविष्ट कर रहा है, वहीं विश्लेषण की इस दिशा का अनुसरण करते हुए यह फिल्म न केवल कौतुहलपूर्ण अपितु एक क्रांतिकारी विषमता को प्रकट करता है :
एक 'स्लमडॉग' परम्परागत भारतीय शिक्षा-पद्धति की मात्र दो या तीन पहलूओं को ही प्रयोग में लाता है और उसमें सफलता हासिल करता है जब की बाकी सभी अपनी आधुनिक तथाकथित पाश्चात्य शिक्षा के होते हुए भी असफल सिद्ध होते हैं।[15]

'रामायण' में दूसरा निर्वासन अवश्य ही उस समय घटित होता है जब राम को चौदह वर्षों के लिए राज्य का त्याग करना पड़ता है। जमाल और सलीम, तथा लतिका को भी फिल्म में जल्द ही निर्वासित किया जाता है क्योंकि वे अपनी माँ को खो देते हैं और उनकी देख-रेख करने वाला कोई सगा-संबंधी भी मौजूद नहीं होता। फिल्म के अन्त में जमाल अठारह वर्ष का हो चुका था। यदि हम उसकी औसतन उम्र चार वर्ष लगाएँ जब हिंसक भीड़ के द्वारा उसकी माँ का कत्ल हुआ था, तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि उसका 'निर्वासन' भी चौदह वर्ष का ही था। इस कालावधि के अतं में, जैसे अयोध्या में राम का प्रत्यावर्तन प्रजा के द्वारा उत्सव रूप में मनाया गया, उसी प्रकार 'कुइज़-शो' में जीतने के बाद, उसके अपने लोग, जमाल की जय-जयकार करते हुए खुशियाँ मनाते हैं-

ब्लाइज़ेक तथा डुमारे : क्या स्लम डॉग मिलियनेयर *रामायण* का पुनर्कथन है?

–यह कार्यक्रम (शो) आम आदमी के लिए "बचकर निकलने" तथा "एक सर्वथा नये जीवन में प्रवेश" को प्रस्तुत करता है।

'रामायण' मूलतः एक धर्मग्रन्थ है, जो भी इसका वाचन अथवा श्रवण करते हैं– उनके लिए नैतिकता का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। भिन्न परिस्थितियाँ होते हुए भी 'स्लमडॉग' में जमाल भी नैतिक तथा असाधारण रूप से ईमानदार इन्सान है। उस पर अत्याचार किए जाने पर भी वह झूठ नहीं बोलता। जब जमाल पुलिस इंस्पेक्टर पर यह आरोप लगाता है कि वह उसे झूठा समझता है क्योंकि जमाल झुग्गी–झोंपड़ी में रहता है, तो इंस्पेक्टर उत्तर देता है कि "पर मिस्टर मलिक यह बात तो तय है कि तुम झूठे नहीं हो। तुम बहुत ही ईमानदार हो।" प्रश्नकर्ता को भी मानना पड़ता है कि जमाल एक ईमानदार इन्सान है, जो इस तथ्य को विशिष्ट रुप से दर्शाता है कि वह सद्गुण संपन्न है।

स्वयं 'कुइज़–शो' (प्रश्नोत्तर कार्यक्रम) ही जमाल की सच्चाई और ईमानदारी के एकाधिक उदाहरण प्रस्तुत करता है, फिल्म को *'रामायण'* के साथ जोड़ने वाली कड़ियाँ, और इन्हें अर्थपूर्ण ढंग से प्रकट करने के लिए दर्पण अथवा प्रतिबिम्बों का प्रयोग किया गया। 'गेम–शो' के प्रश्नकर्ता एक प्रश्न पूछते हैं, "राम का चित्रण करते हुए, वह प्रसिद्ध वस्तु क्या है जिसे वे अपने दाहिने हाथ में धारण किए हुए हैं?" जमाल से जितने भी संभावित प्रश्न पूछे जा सकते थे, उनमें से राम के विषय में पूछा गया यह प्रश्न इस बात की ओर संकेत करता है कि इस, फिल्म में 'राम' महत्त्वपूर्ण हैं। जब जमाल 'धनुष और बाण' का सही उत्तर देता है तो बाद में उसे पुलिस इंस्पेक्टर के सामने स्पष्ट करना पड़ता है कि उसे इस उत्तर की जानकारी कैसे हुई थी। *'स्लमडॉग मिलियनेयर'* तथा *'रामायण'* की प्रांरभिक कड़ियों में यह संकेत मिलता है कि सहसा साम्प्रदायिक तनाव फूट पड़ते हैं और किशोर बालक जमाल जिस झोंपड़–पट्टी में रहता था, उस पर हमला किया जाता है। दंगाइयों से बचकर भागते हुए, जमाल का आमना–सामना अपने दर्पण–प्रतिबिम्ब से होता है– राम के वेश में उसी की आयु का एक लड़का।

धर्म तथा फिल्म पत्रिका
Journal of Religion & Film, Vol.19 [2015], Iss. 2, Art-1.

भारतीय परम्परा में, देवी-देवताओं की प्रतिमाओं के आदर्श मापदण्ड हैं। राम के चित्रण में हम देखतें हैं कि उसके तरकस में बाण हैं तथा हाथ में धनुष धारण किए हुए है तथा अन्य हाथ अभय-मुद्रा में है जो इस बात की ओर संकेत करता है कि कोई संकट या भय नहीं है-फिल्म में यह किशोर बालक भी इसी भाव को प्रतिबिम्बित करता है। दोनों ही किशोर-जमाल तथा राम के वेश में यह बालक-एक समान लम्बाई तथा अभिव्यक्ति लिए हुए, एक-दूसरे को एकटक कुछ क्षणों के खत्म होने तक देखते हैं और फिर जमाल भाग जाता है। बाद में यही अनुभव जमाल को प्रश्न का सही उत्तर देने में मदद करता है- जमाल और राम के बीच की इस कड़ी ने अत्यन्त भावुक और गहरे पल प्रदान किये थे। विषय तथा उसका प्रतिबिम्ब- एक ही साथ समानता और विरोधिता-दोनों ही उपस्थित हैं।

इस कड़ी का एक अन्य उदाहरण वहाँ उपस्थित है जहाँ आखिरकार जमाल लतिका को खोज लेता है जो कि जावेद के साथ रह रही थी। पृष्ठभूमि में टेलीविज़न पर 'कौन करोड़पति बनना चाहता हैं'- कार्यक्रम चल रहा है तथा एक अन्य प्रतियोगी से प्रश्न पूछा जाता है कि : "इनमें से द्वीपों की कौन-सी छोटी श्रृंखला भारत और श्रीलंका को जोड़ती है?" फिल्म के ये पल अपने आप में *'रामायण'* तथा *'स्लमडॉग'* के बीच समानान्तरता को दर्शाने में अधिक योगदान नहीं देते। परन्तु फिल्म के अन्य अंशों से जुड़कर, विशेष रूप से रावण, महाकाव्य में लंका का राजा है, पृष्ठभूमि में व्याप्त असंबद्ध शोर एक अन्य तत्त्व की ओर संकेत करता है कि *रामायण* के कुछ अंश फिल्म में विद्यमान हैं।

पूर्व में चर्चा करते हुए यह कहा गया है कि प्रारब्ध *'रामायण'* का एक महत्त्वपूर्ण भाग है। चूँकि राम विष्णु के अवतार हैं तथा सीता लक्ष्मी की अवतार हैं, भूलोक में उनका साथ होना ही उनका प्रारब्ध है। यद्यपि राम के सभी कार्य मनुष्योचित हैं, परन्तु उनका जीवन और व्यवहार 'धर्म' पर आधारित है।

ब्लाइज़ेक तथा डुमारे : क्या स्लम डॉग मिलियनेयर *रामायण* का पुनर्कथन है?

प्रारब्ध का अत्यन्त सरलीकृत स्पष्टीकरण परिणामतः 'धर्म' और कर्म के संदर्भ में, तथा उसकी आलोचना कि इसलिए विकल्प अथवा स्वतंत्रता का कोई अस्तित्व ही नहीं है, निःसंदेह *रामायण* में इसके पर्याप्त दृष्टान्त उपलब्ध हैं, कि अपने अतीत से अनुबद्ध चरित्रों के पास विकल्प है कि वे अपने 'धर्म का पालन करें अथवा उस मार्ग से हट जाएँ। किसी भी बिंदु पर राम अपने 'धर्म' को त्याग सकते थे पर उन्होंने ऐसा न करने का ही विकल्प चुना। *'स्लमडॉग'* में जमाल भी बहुत बार ऐसी परिस्थितियों का सामना करता है जब लतिका का परित्याग कर सकता था, हिंसा का सहारा ले सकता था, कठिन परिस्थितियों से हार मान सकता था, बेईमानी कर सकता था, या फिर केवल मात्र धन-लाभ से प्रेरित होकर उसमें जीतने की कोशिश में लगा रहता। वह इनमें से किसी विकल्प का भी चुनाव नहीं करता। इसके फलस्वरूप यह दर्शाता है कि जो "लिखित" था, "प्रारब्ध" में है-वह वास्तव में आदि से अंत तक विविध परिस्थितियों के द्वारा सिद्ध होता है कि सही निर्णय लेने के विकल्प पर निर्भर है। जमाल को समूचे फिल्म में कर्ता के रूप में देखते हुए-फिल्म के सर्वाधिक स्पष्ट दृष्टान्तों को स्वीकारते हुए इस सिद्धान्त की सरलीकृत व्याख्या कि प्रारब्ध पर अधिक बल दिया गया है- की आलोचना भी की गई है।[16]

संस्कृत साहित्य के महाकाव्यों में प्रायः धर्म, प्रारब्ध तथा विकल्प की सूक्ष्म-भेदयुक्त अंतःक्रीड़ा सदैव उपस्थित है, जो इस तथ्य को समझ पाने में सहायक सिद्ध होता है कि अन्यथा फिल्म में इसकी उपस्थिति अनुपयुक्त तथा अविवेकपूर्ण होती।

फिल्म के प्रारम्भिक भाग में, चित्रपट पर निम्नलिखित शब्द उभर कर सामने आते हैं :

"20 करोड़ की धन-राशि जीतने से जमाल मलिक केवल एक प्रश्न दूर है। उसने ऐसा कैसे किया? A. उसने छल किया। B. वह किस्मतवाला है। C. वह प्रतिभाशाली है। D. यह लिखित है।"

चूँकि जमाल ने कोई धोखा नहीं किया, वह किस्मतवाला भी नहीं है, और चालाक होते हुए भी प्रतिभाशाली नहीं है, हम जैसे दर्शक "D. यह लिखित है।" उत्तर का चुनाव करते हैं जिससे फिल्म के बाकी अंश में प्रारब्ध का विन्यास निर्मित होता है।

धर्म तथा फिल्म पत्रिका
Journal of Religion & Film, Vol.19 [2015], Iss. 2, Art-1.

'गेम–शो' के प्रस्तुकर्ता प्रेम तथा जमाल के बीच परस्पर व्यवहार के दौरान प्रारब्ध का केन्द्रीय भाव निंरतर जारी रहता है। कुइज़ में पूछे गए प्रश्नों में से एक प्रश्न के विषय में जब जमाल प्रेम से कहता है कि उसे उस प्रश्न का उत्तर नहीं आता तो प्रेम जमाल को इस खेल में आगे बढ़ने को बाध्य करता है, सम्भवतः इस आशा से कि जमाल अब तक जीती गई धनराशि को खो देगा। शौच–घर जाने के अन्तराल में, प्रेम जमाल को कृत्रिम प्रोत्साहन देते हुए कहता है, "शायद ये लिखा हुआ है, दोस्त।" दर्पण–बिम्ब के एक अन्य प्रयोग में, प्रेम बाथरूम के शीशे पर जमी भाप पर अगले प्रश्न का उत्तर लिख देता है। जमाल इस उत्तर को देखता है, पर उसका उपयोग नहीं करता क्योंकि ऐसा करना छल होता। कार्यक्रम (शो) में पुनः आकर प्रेम जमाल से फुसफुसाता है, "सही काम करो तो लगभग अगले तीन मिनटों में तुम मेरी तरह मशहूर हो जाओगे। मेरी ही तरह अमीर, करीब–करीब।" उसके पश्चात वह आगे कहता है, "आराम से। यह तुम्हारी किस्मत है।" ज़ाहिर है कि प्रेम ने जमाल को गलत उत्तर का संकेत दिया है, इस घटना के द्वारा फिल्म में भाग्य के खेल का विंडबनात्मक प्रयोग किया गया है।[17] फिर भी जमाल प्रेम के द्वारा लिखे गऐ उत्तर से भिन्न उत्तर का चुनाव करता है, और वह सही उत्तर निकलता है। पुनः उचित आचरण का चुनाव करके वास्तव में जमाल अपने प्रारब्ध को सिद्ध करता है, वह जो "लिखित" है। कर्तृत्व और प्रारब्ध का सह–अस्तित्व है।

अंततः लतिका के साथ पुनः सम्पर्क स्थापित करना तथा एक सुरक्षित, खुशहाल जीवन की तलाश करना ही जमाल का इस 'गेम–शो' को जीतने का उद्देश्य था। जमाल का विश्वास है कि यही उन दोनों का भाग्य है और यही प्रारब्ध की भावना दीर्घकाल तक उसे प्रेरित करती रहती है। जब जमाल और सलीम को पता चलता है कि लतिका मामन के अधीन काम करती है और वे किसी तरह बचकर भाग निकलते हैं और एक वीरान होटल में आश्रय लेते हैं, तब जमाल लतिका से कहता है, "मुझे विश्वास था कि एक न एक दिन मैं तुम्हें पा लूँगा। यही हमारी किस्मत है।"

ब्लाइज़ेक तथा डुमारे : क्या स्लम डॉग मिलियनेयर *रामायण* का पुनर्कथन है?

इसके जवाब में लतिका केवल एक शब्द कहती हैः "किस्मत" आखिरकार, फिल्म के अंत में, रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर जब जमाल और लतिका मिलते हैं– सभी खलनायकों को परास्त करने के बाद तथा लोगों के हृदय में आनन्दोत्सव का संचार करके, जमाल लतिका से कहता है, "यही हमारी किस्मत है।" ऐसे में जब वे एक–दूसरे को चूमते हैं तो वही शब्द "D. यह लिखित है।" पर्दे पर उभरता है। इस प्रकार से प्रारब्ध इस फिल्म का एक महत्वपूर्ण तत्त्व है, यद्यपि यह ऐसा तत्त्व नहीं है जो निष्क्रियता की ओर ले जाए, मानो केवलमात्र भाग्य पर छोड़ दिया जाए कि वह चाहे जिस ओर ले जाए। बल्कि वास्तव में अपने प्रारब्ध के मार्ग का पालन करने में, जैसा कि "रामायण" में दर्शाया गया है, अत्यधिक वीरता, दृढ़ता, नैतिक, सदाचार तथा प्रेम घनिष्ठ रूप से निहित है। उचित आचरण करना अत्यन्त कठिन मार्ग है, चाहे वह "लिखित" हो या "प्रारब्ध"। *"रामायण"* में राम के द्वारा किए गए कार्य और 'स्लमडॉग' में जमाल के कार्यों में सदाचार के पथ पर अग्रसर होते हुए आनेवाली विपत्तियों, आवश्यकताओं तथा अन्त में प्राप्त होने वाले पुरस्कारों की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। संभवतः *'स्लमडॉग मिलियनेयर'* के अंत में *रामायण* का संदर्भ फिल्म के साथ स्पष्टतया प्रकट होता है। फिल्म निर्माताओं ने बॉलीवुड– शैली में रेलवे–प्लेटफॉर्म पर नृत्य–संगीत का चित्रांकन सम्मिलित किया है। पर्दे पर आभार–प्रदर्शन के समय, फ्रीडा पिंटो, देव पटेल तथा अन्य अभिनेता–कलाकार और फिल्मकर्मी 'जय हो' गीत की धुन पर खुशी से नाचते हैं। दोनों प्रमुख चरित्र अभिनेता नृत्य के अंत में परस्पर हाथों में हाथ डाले, कैमरे से दूर एक बैनर के नीचे पहुँते है जो अब तक आंशिक रूप से धुंधला–सा था। इस बैनर पर राम तथा सीता का चित्र अंकित है और उस पर छपा हुआ *'रामायण'* शब्द साफ झलकता है। यह वह क्षण है जो स्पष्ट रूप से हमारे इस परिप्रेक्ष्य को सम्पूर्णतः प्रमाणित करता है कि *'स्लमडॉग मिलियनेयर'* तथा *'रामायण'* के बीच एकाधिक समानांतरता है, एक ऐसा महाकाव्य और धर्मग्रंथ जिसने प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक, भारत से लेकर पूरे विश्व–भर को प्रभावित और प्रेरित किया है।

धर्म तथा फिल्म पत्रिका
Journal of Religion & Film, Vol.19 [2015], Iss. 2, Art-1.

1. एक अन्य महाकाव्य 'महाभारत' है जो विश्व की सबसे दीर्घ कविता है। सुप्रसिद्ध भगवद्–गीता महाभारत में से लिया गया एक लघु उद्धरण है।
2. उदाहरण के लिए, दो आधुनिक फिल्मों के संस्करण जिसमें से पहला सुभाष घई (जो वर्तमान युग में भारत के सर्वाधिक सफल निर्देशकों में से माने जाते हैं) की फिल्म 'राम–लखन' (1989) ने भी अपना मूल कथानक 'रामायण' से ही ग्रहण किया है, जबकि नीना पाले की विवादास्पद फिल्म "सीता सिंग्स द ब्लूज़"(2008) एक पाश्चात्य नारी के परिप्रेक्ष्य से इस महाकाव्य को प्रस्तुत करती है।
3. ब्रिटिश लाइब्रेरी ने *रामायण* का त्वरित (फलैश) संस्करण अत्यन्त संक्षेप में प्रस्तुत किया है–
   http://www.bl.uk/learning/cult/sacred/stories
   जो पाठक 'रामायण' से अपरिचित हैं, वे इस साईट पर इस कहानी का संक्षिप्त विवरण प्राप्त कर सकते हैं। 'रामायण' को पढ़ने में रुचि रखने वाले सी. राजागोपालाचारी कृत उत्कृष्ट अनुवाद "द रामायणा बाय वाल्मीकि" को पढ़ सकते है :(लॉरियर बुक्स, 2001)
4. उदाहरण के लिए "भगवद्–गीता" 4.7 देखें।
5. व्हाट हैपंस आफटर दिस वेरीज़ इन वरज़न्स ऑफ द "रामायणा।" (*रामायण* के अन्य संस्करणों में क्या भिन्नताँए हैं)
6. जेफ़रीस, स्टुआर्ट, "आइ एम द लकिअस्ट नावेलिस्ट इन द वर्ल्ड।" द गार्डियन, जनवरी 16, 2009.
   http://www.theguardian.com/books/2009/jan/16/danny-boyle-india.
7. आइबिड (Ibid)
8. ब्यूफॉय, साइमन, "लाइफ़ ऑन द हार्ड शोल्डर।" द गार्डियन दिसम्बर 12, 2008.
   http://www.theguardian.com/film/2008/dec/12/simon-beaufoy-slumdog-millionaire
9. गोकुलसिंग, मोती के., एण्ड विमल दिशानायके इण्डियन पॉपुलर सिनेमा : ए नेरेटिव ऑफ कल्चरल चेंज। स्टोक–ऑन–ट्रेंट, यू.के : स्टाइलस पब्लिशिंग, 2004, p.20.
10. वॉयनार, किम. "कंसिडर द सोर्स : साईमन ब्यूफॉय'स एडाप्टेशन ऑफ स्लमडॉग मिलियनेयर।" एक्सेस्ड 14 सितम्बर, 2015.
    www.moviecitynews.com/columnists/voynar/2008/08119.html
11. आइबिड (Ibid)
12. फिल्म के कथानक तथा *रामायण* के बीच ऐसी सामान्य तुलनाएँ अन्य लोगों द्वारा भी की गयी हैं। उदाहरण के लिए देखें एलफ्रेड कॉलिंस का लेख, "सलाम स्लमडॉग! पर्सनल एंड कल्चरल ट्रॉमा एंड रेस्टिट्युशन इन द मुम्बई स्लम्स"– नेशनल एकेडमी ऑफ साईकोलोजी (NAOP) इण्डिया साइकोलोजिकल स्टडीज़ (सितम्बर 2009) 54:194-201.
13. उदाहरण के लिए, आर.के. नारायण कृत "द रामायण" देखें।
    राम के द्वारा पराजित रावण "उसके मुख पर तेजस्विता के अद्भुत लक्षण दिखाई दिए। राम के तीरों ने रावण की आत्मा पर पड़ी मलिनता, क्रोध, घमण्ड, क्रूरता, वासना तथा अहंकार की सख्त पर्तों को जलाकर राख कर दिया, और अब व्यक्तित्व का वास्तविक स्वरूप भासित होने लगा– ऐसा रूप जो भक्तिमय तथा अद्भुत उपलब्धियों की संभावनाओं से परिपूर्ण था। राम का निरंतर ध्यान करते हुए, चाहे प्रतिद्वन्द्वी के तौर पर ही क्यों न हो, उसके मुख पर निर्मलता तथा प्रशान्ति की आभा को देखकर ऐसा लगा कि उसे फल की प्राप्ति हुई है।" (1977, 159).

ब्लाइज़ेक तथा डुमारे : क्या स्लम डॉग मिलियनेयर *रामायण* का पुनर्कथन है?

अथवा एक अन्य संस्करण में, रावण की मृत्यु के विषय में विचार व्यक्त करते हुए राम कहते हैं "यह सत्य है कि इस राक्षस का जीवन असत्य, छल, क्रूरता तथा अनैतिकता से परिपूर्ण था परन्तु वह भव्य, साहसी, शक्तिशाली भी था, तथा कभी किसी युद्ध में पराजित नही हुआ था। मृत्यु हर शत्रुता को समाप्त कर देती है।" (सत्तार 2000, 627)

14. 'स्लमडॉग मिलियनेयर' तथा महाकाव्य के बीच कुछ रोचक तुलनाएँ, तथा उन तुलनाओं का खण्डन, निम्नलिखित में देखा जा सकता है।
http://www.svabhinava.org/abhinava/Dialogues/Slumdog:frame.php
15. भारतीय शिक्षा के पारम्परिक स्वरूप, साथ ही साथ उनके लाभों की अधिक जानकारी के लिए देखें डुमारे, एम.एम. (2012) "क्लोज़ रिलेशन्स : पण्डित्स, पेडागॉजी एण्ड प्लासटिसिटी" इन संस्कृत- साधुता "गुडनेस ऑफ संस्कृत": स्टडीज़ इन ऑनर ऑफ प्रोफसर अशोक अक्लुज्कर, दिल्लीः डी.के. प्रिंटवर्ल्ड।
16. उदाहरण के लिए, "रीडिंग स्लमडॉग एक्रॉस कल्चर्स" डन्कन (2011) ने अपने लेख में ऐसा आशय प्रकट किया है कि प्रारब्ध तथा कर्तृत्व-परस्पर विरोधी तथा असंगत हैं। उसका विचार है कि "जमाल के द्वारा भी बारम्बार यह दावा करना कि उसकी तलाश उसका प्रारब्ध या 'विधि का लेख' है, लोकप्रिय सिनेमा के संस्कृत के मूल प्रभाव का सरासर अपमान है; जमाल की सूझबूझ तथा उपाय कुशलता से एक लावारिस छोकरे का करोड़पति बन कर उभरना कर्तृत्व भाव पर अधिक बल देता है, पूर्वनिर्दिष्ट कथानक की रूपरेखा जिसका प्रतिरोध करने में असमर्थ है।" इसके विपरीत हमारा तर्क है कि प्रारब्ध और कर्तृत्व हमेशा परस्पर साथ-साथ रहते हैं। *रामायण* जैसे संस्कृत साहित्य में ऐसे सह-अस्तित्व का प्रतिपादन किया गया है।
17. प्रारब्ध का एक अन्य व्यंग्यपूर्ण उल्लेख तब होता है जब मामन सलीम पर दबाव डालता है कि वह उसके लिए काम करे बनिस्बत इसके कि उसकी भी दशा उन उत्पीड़ित और शोषित बच्चों की तरह हो जाए, जो उसके शिंकजे में हैं। मामन सलीम से व्यंग्यपूर्ण लहज़े में कहता है, "तुम्हारी किस्मत तुम्हारे हाथों में है, भाई।" इससे यह संदेश मिलता है कि सलीम का भाग्य उसके हाथों में 'नहीं' है।

संदर्भ-निर्देश

ब्यूफॉय, साइमन, "लाईफ ऑन द हार्ड शोल्डर" द गार्डियन। दिसम्बर 12, 2008.

http://www.theguardian.com/film/2008/dec/12/simon-beaufoy-slumdog-millionaire.

ब्लाइज़ेक, विलियम एल., एड. द ब्लूम्सबरी कम्पेनियन टु रिलिजियन एण्ड फिल्म, युनाइटेड स्टेट्स : कन्टिनम पब्लिशिंग, 2013.

कॉलिन, ऐलफ्रेड. "स्लमडॉग मिलियनेयर! पर्सनल एण्ड कल्चरल ट्रॉमा एण्ड रेस्टिटयुशन इन द मुम्बई स्लम्स।" साइकोलॉजिकल स्टडीज़ 54. नम्बर.3 (सितम्बर 2009): 194-201.

डुमारे, मिशेल मारी. "क्लोज़ रिलेशन्ज़ : पंडित्स, पेडागॉजी एण्ड प्लास्टिसिटी" इन वातानाबे, चिकाफुमी, मिशेल डुमारे, योशीचिका होण्डा। संस्कृत-साधुता : गुडनेस ऑफ संस्कृत : स्टडीज़ इन ऑनर ऑफ प्रोफ़ेसर अशोक अक्लुज्कर, नई दिल्ली : डी.के. प्रिंटवर्ल्ड, 2012.

धर्म तथा फिल्म पत्रिका
Journal of Religion & Film, Vol.19 [2015], Iss. 2, Art-1.

"डायलॉग– स्लमडॉग मिलियनेयर एण्ड सलाम बाम्बे!" 14 सितम्बर 2015 ऐक्सेस किया गया।

http://www.svabhinava.org/abhinava/dialogues/slumdog-frame.php.

डॉयर रेचेल (Dwyer, Rachel) फिल्मिंग द गॉड्सः रिलिजियन एण्ड इण्डियन सिनेमा (रिलिजियन एण्ड मीडिया) फर्स्ट एड. (1st ed) लण्डन : राउटलेज (Routledge), 2006.

गोकुलसिंग, मोती के., एण्ड विमल दिशानायके।

इण्डियन पॉपुलर सिनेमाः ए नेरेटिव ऑफ कलचरल चेंज। स्टोक–ऑन ट्रेन्ट, यू.केः स्टाइलस पब्लिशिंग, 2004.

होगान, पेट्रिक कोल्म. अंडरस्टेन्डिंग इण्डियन मूवीज़ : कल्चर, कोग्निशन, एण्ड सिनेमेटिक इमेजिनेशन। फर्स्ट एड.(1st ed) ऑस्टिन, टीएक्सः यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सस प्रेस, 2008.

जेफ़रीस, स्टुआर्ट, "आई एम द लकियस्ट नावेलिस्ट इन द वर्ल्ड।" द गार्डियन, जनवरी, 16, 2009.

http://www.theguardian.com/books/2009/jan16/danny-boyle-india.

लट्गेनडार्फ फिलिप, "इज़ देयर ऐन इण्डियन वे ऑफ़ फिल्म मेकिंग?" इण्टरनेशनल जरनल ऑफ़ हिन्दु स्टडीज़ 10, नम्बर 3 (जुलाइ, 7, 2007): 227-56.

नारायण आर.के. (अनुवाद) वाल्मीकि। द रामायणः

ए शार्टेण्ड माडर्न प्रोज़ वरज़न ऑफ द इण्डियन एपिकः शार्टेण्ड माडर्न प्रोज़ वरज़न ऑफ द इण्डियन एपिक। न्यूयॉर्क, एन.वाई., यु.एस.ए, पेंगुइन क्लसिक्स, 1993।

पॉवेल्स, हीडी आर एम (Pauwels, Heidi R.M.), एड. (ed) इण्डियन लिट्रेचर एण्ड पॉपुलर सिनेमा : रीकास्टिंग क्लासिक्स. लण्डन : राउटलेज (Routledge), 2009।

पॉवेल्स, हीडी रिका मारिया. द गॉडेस एज़ रोल मॉडलः सीता एण्ड राधा इन स्क्रिप्चर एण्ड ऑन स्क्रीन. न्यूयॉर्क : ऑक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2008.

राजागोपालाचारी, सी.रामायणा. शारातीया विद्या भवन, बॉम्बे, इण्डिया, 2001.

सत्तार, अर्शिया (अनुवाद) वाल्मीकि. द रामायणा. दिल्ली : पेंगुइन बुक्स इण्डिया, 2000.

स्टीफेंस डन्कन, आर. "रीडिंग स्लमडॉग मिलियनेयर एक्रास कल्चर्स", द जरनल ऑफ कॉमनवेल्थ लिट्रेचर 46, नम्बर 2 (जून 1, 2011) 311-26.

स्वरूप विकास. स्लमडॉग मिलियनेयरः ए नॉवेल. न्यूयॉर्क : साइमन एण्ड स्कस्टर (Simon & Schuster) एडल्ट पब्लिशिंग ग्रुप, 2008।

वॉयनर, किम. "कन्सिडर द सोर्सः साइमन ब्यूफॉय'स एडाप्टेशन ऑफ स्लमडॉग मिलियेनर" ऐक्सेस्ड 14 सितम्बर 2015.

www.moviecitynews.com/columnists/voynar/2008/08119.html.

A BRIEF NOTE ABOUT THE TRANSLATOR

Ms. Mita Ghosh, an educationist in the field of School Education in New Delhi, India has translated this Article – "Blizek and Desmarais: Is Slumdog Millionaire a Retelling of the Ramayana" from Journal of Religion & Film, Vol. 19 [2015], Iss. 2, Art. 1 – from English into Hindi Language.

Ms. Mita Ghosh, is a multi-lingual person with a proficiency in English, Hindi, Japanese and Bengali. She has to her credit several translated works like Monograph, Plays, Poetry & Stories of eminent authors published in 'Samkaleen Bharatiya Sahitya' (Contemporary Indian Literature) a literary magazine of Sahitya Akademi, New Delhi.

Presently she devotes her time in a systematic study of Indian Scriptures.

Email: ghoshmita19@gmail.com

अनुवादक का संक्षिप्त विवरण

श्रीमती मीता घोष एक शिक्षाविद् हैं, जिन्हें स्कूली–शिक्षा के क्षेत्र में दीर्घकाल का अनुभव है।

धर्म तथा फिल्म पत्रिका (Journal of Religion & Film, Vol.19 [2015], Iss. 2, Art-1) – के अर्न्तगत्– "ब्लाइज़ेक तथा डुमारे : क्या स्लम डॉग मिलियनेयर रामायण का पुनर्कथन है" लेख का हिन्दी में अनुवाद श्रीमती मीता घोष ने किया है।

बहुभाषी श्रीमती मीता घोष हिंदी, अंग्रेजी, जापानी तथा बाँग्ला भाषाओं पर समान अधिकार रखती हैं। उनके द्वारा अनूदित सुप्रसिद्ध लेखकों की रचनाएँ– मोनोग्राफ, नाटक, कविताएँ तथा कहानियाँ आदि साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली की 'समकालीन भारतीय साहित्य' पत्रिका में प्रकाशित हुई हैं। वर्तमान में वे भारतीय आध्यात्मिक शास्त्रों के गहन अध्ययन–मनन में रत हैं।

Email: ghoshmita19@gmail.com

Published by DigitalCommons@UNO, 2015